प्रचार –प्रसार हेतु विभिन्न बिंदु

घास–फूस के झुग्गी–झोपड़ी घर के लिए आवश्यक सलाह–

1. **अग्नि निरोधक फूस का घर** – घर के सभी टाट पर मिट्टी, बालू, गोबर, भुस्सी का मिश्रण कर लेप बनाकर लगाना अत्यावश्यक है। छप्पड़ पर भी लेप लगा दे जिसे बरसात में टीना चदरा/पॉलिथीन से ढ़क सकते हैं।
2. एक झोपड़ी से दूसरे झोपड़ी की दूरी 20 फीट से अधिक रखें।
3. बिजली के नंगे तार के नीचे झोपड़ी न बनावें।
4. हरे पेड़, जैसे केला में अग्नि ताप को कम करने की क्षमता होती हैं । अतः इसे अपने घर के चारों ओर लगायें ।
5. घर में हमेशा अग्नि निरोधक पदार्थ जैसे कि पानी, बालू, (बड़े ड्रम में/बाल्टी में), सूखी मिट्टी/धूल इत्यादि जमा कर रखें, जिसका प्रयोग अग्निकांड में करें।
6. खुली जगह में कूड़ा जलाने हेतु या अन्य परिस्थिति में आग न जलावें । अत्यावश्क स्थिति में जलाने से पहले बड़ा बाल्टी में पानी एवं लोटा अवश्य रखें।
7. दीप, लालटेन, ढ़िबरी आदि के प्रयोग में सावधानी बरतें । सोते वक्त उन्हें जलता हुआ न छोड़े।
8. रोशनी के लिए बैटरी वाले संयत्र जैसे टार्च, इमरजेन्सी लाईट आदि का हीं प्रयोग करें ।
9. तेज हवा में खुली जगह पर खाना न पकायें । अत्यावश्क स्थिति में पानी का पर्याप्त प्रबंध कर चूल्हे को घेर कर रखें ।
10. रसोई घर में कोई भी ज्वलनशील पदार्थ न रखें, जैसे मिट्टी तेल, सिंथेटिक कपड़े इत्यादि ।
11. रसोई घर में आग जलाने से पहले सभी जरूरी सामान जुटा लें ताकि जलता चूल्हा छोड़कर इधर–उधर न जाना पड़ें ।
12. जहॉ पर भोजन बनाया जा रहा है उसके आस–पास कोई भी सूखे जलावन न रखें।
13. हवा तेज होने के पूर्व खाना बना लें । विशेषकर जिनके घर फूस एवं खपरैल के हैं वे सुबह 8 बजे के पहले और रात्रि 7 बजे के बाद खाना बनाएँ तो बेहतर होगा । जब तेज हवा चल रही हो तो खाना न बनाएँ।
14. खाना बनाने वक्त सूती कपड़ा पहनें। साड़ी के पल्लू से चूल्हे पर चढ़े बर्तन को न उठावें। इस कार्य हेतु सूती कपड़ा या चिमटा का इस्तेमाल करें।
15. अत्यावश्यक स्थिति में आग जलाने से पहले एक बाल्टी पानी तथा लोटा पास में सावधानी के तौर पर रखें।
16. भोजन बनाने के बाद चूल्हे कै आग को पूर्ण रूप से पानी डालकर बुझा दें ।
17. किसी भी जलते पदार्थ को बुझा कर ही सोऍ ।
18. आग बुझाने के लिए पानी, बालू और सुखी मिट्टी/धूल का प्रयोग करें ।
19. राख–फेकते समय अश्वस्त हो लें कि उसमें कोई चिंगारी तो नहीं हैं ।
20. राख को खर–पतवार से अलग एक गड्ढे में रखें ।
21. झोपड़ी के उपर शीशे के टूकड़े न रखें।
22. घर के आसपास लगे हुए पम्प सेट की जॉच कर उसे किसी भी समय उपयोग में लाने के लिए तैयार अवश्य रखें ।
23. दीपक (दिया), लालटेन, मोमबत्ती को ऐसे जगह पर ना रखें जहॉ गिरकर आग लगने की संभावना हों ।
24. घर में किसी शादी व्याह या अन्य किसी उत्सव के लिए लगाये गये कनात अथवा टेण्ट के पास से बिजली के तार न ले जाऍ ।

25.जहॉ पर सामूहिक भोजन इत्यादि का कार्य हो रहा हो वहॉ पर दो से तीन ड्रम पानी अवश्य रखा जाये । वहॉ पर भी भोजन बनाने का कार्य तेज हवा के समय नहीं किया जायें ।

26.बिजली के कनेक्शन के लिए कम या खराब गुणवत्ता वाले तार का प्रयोग ना करें ।

27.सिगरेट या बीड़ी के लिए जलती हुई माचिस की तिली अथवा बीड़ी एवं सिगरेट पीकर अधजला टूकड़ा इधर–उधर ना फेके ।

28.आटा चक्की से निकलने वाले आग पर ध्यान रखें एवं इसके पास भी पर्याप्त मात्रा में पानी रखें क्योकि इससे भी आग लग सकती है ।

29.मच्छरों से बचने के लिए पशुघर में घूरा न लगावें । यदि लगाने की आवश्यकता हो तो घूरा के पास पर्याप्त मात्रा में पानी का प्रंबध करें।

30.पटाखों का प्रयोग सावधानी से करे। आसमानी पटाखा से बचें।

31.**शरीर के कपड़े में आग लगने पर**–शरीर के कपड़े में आग लगे तो भागे नहीं, जमीन पर लुढ़के।

32.सभी लोग को प्राथमिक उपचार की जानकारी होनी चाहिए।

खेत–खलिहान/ जंगल में आग –

1. जगह हो तो फसल का ढ़ेर न लगाऐं। उसे बोझा या बंडल की कतार में रखें।
2. खलिहान में फसल की ढेर की उॅचाई 20 फीट से अधिक न रखें। एक ढेर से दूसरे ढेर की दूरी 20 फीट से अधिक हो। खलिहान में पूजा में उपयोग वाली अगरबत्ती, धूप आदि पर तब तक नजर रखें, जब तक वह पूरी तरह बुझ नहीं जाती ।
3. फसल का ढेर लगाते समय ढेर के बीच में मोटा खम्भा देकर लगावें तथा ढेर लग जाने के बाद उसे निकाल दे।
4. यदि खेत–खलिहान के आसपास कोई तालाब, बोरिंग या अन्य जलश्रोत हो तो वहॉ से खेत–खलिहान तक का सिंचाई में उपयोग आने वाला पाईप एवं पम्पसेट सही हालत में तैयार रखें ।
5. थ्रेसर का इस्तमाल करते समय उसके पास पर्याप्त मात्रा में पानी रखें क्योकि इससे उठने वाले आग की लपटों से खेत–खलिहान एवं घरों में आग लग सकती है।
6. थ्रेसर चलाने में उपयोग आने वाले डीजल ईंजन या ट्रेक्टर के धुऑ वाले पाईप से हवा की दिशा में अनाज का बोझा नहीं रखें ।
7. खलिहान के आसपास बीड़ी, सिगरेट न पीयें एवं न किसी को पीने दें ।
8. बिजली के तार के नीचे फसल न रखें।
9. बिजली के तार के किसी भी जोड़ को ढ़ीला या खुला न छोड़ें । बिजली के जोड़ को किसी भी प्लास्टिक से नहीं बांधे ।
10. जलती हुई माचिस की तिली या अधजला बीड़ी सिगरेट खेत–खलिहान जंगल में न फेके।
11. खेत या जंगल में लगी आग को झाड़ी या पेड़ की टहनियों से पीट–पीट कर बुझावें।
12. खेत के फसल में आग लग जाने पर कुछ दूरी पर फसल को काट देने से आग आगे नहीं बढ सकेगी।
13. खलिहान में गीला फसल का ढेर न लगाया जाय। जब भी ढेर लगाना हो तो सूखा फसल का ढेर लगाये क्योंकि गीला फसल के ढेर में श्वतः दहन (Spontaneous combustion) होता है और आग लग जाती है।

घर–दफ्तर में अग्नि सुरक्षा

1. पुराना आंतरिक वायरिंग का सही मरम्मति करवाई जाए, आवश्यकतानुसार नई वायरिंग हो।
2. लो क्वालिटी का बिजली तार प्रयोग न की जाए।
3. कभर्ड बिजली तार लगाकर रखी जाए।
4. बिजली वायरिंग में मेन सर्किट बोर्ड (MCB) अवश्य लगाई जाए।
5. बिजली पैनल BSP Demo Kit में लगाई जाए।
6. समय–समय पर किसी दक्ष विद्युत अभियंता से विद्युत तार का लोड चेक करवाना है। बिजली में निर्धारित भार का ही प्रयोग करें अर्थात् उस तार से कितना वाट का विद्युत उपकरण लगा हुआ है उसी के हिसाब से तार लगवाया जाय।
7. बिजली के प्रेस (आयरन) को उपयोग के बाद बन्द कर देना चाहिए।
8. कार्यालय बन्द होने पर बिजली के स्विच ऑफ कर दें तथा हीटर, पंखों, कुलर, तथा ए0सी0 इत्यादि को बन्द कर दें।
9. पर्दो के निकट बिजली के तार तथा हीटर का प्रयोग न करें।
10. मोमबत्ती, चिराग, अँगीठी का अगर इस्तेमाल करना पड़े तो उसे सुरक्षित स्थान पर रखें।
11. कपड़ों में आग लगने पर भागे नहीं बल्कि जमीन पर लेट कर लुढ़के।
12. कार्यालय (दफ्तर) में धूम्रपान न करें।
13. धूम्रपान की स्थिति में बीड़ी और सिगरेट को बुझाकर फेकें।
14. कूड़ादान में जलती हुई दियासलाई, सिगरेट इत्यादि न फेकें।
15. कार्यालय की आलमारी तथा फाइल इत्यादि को सही स्थान पर रखें।
16. अनावश्यक ज्वलनशील कागज इत्यादि का ढेर न लगायें।
17. सुरक्षित निकलने का निकास द्वार हमेशा बिना अवरोधक का साफ–सुथड़ा रखें।

रसोई घर में गैस से आग

1. सिलिंडर लेते समय पानी से जॉच ले कि बुलबुला दे रहा है या नहीं।
2. रेगुलेटर में फीट करने के बाद भी पानी से जॉच ले।
3. जलते हुए चुल्हें को हमेशा रेगुलेटर से ही बंद करें।
4. रेगुलेटर का पाइप जरूर पोछें।
5. पाइप समय पर बदली करते रहे।
6. अगर किचेन में गैस की गंध आ रही हो, तो इलेक्ट्रीक पैनल से छेड़–छाड़ न करें।
7. गैस की गंध आने पर मोबाइल से बात न करें।
8. हवा से 250 गुणा L.P.G. भारी होता है। लिकेज होने पर यह सतह पर ही रहता है, अतः पूर्ण भेन्टीलेट कर दें तथा सिलिंडर यथासंभव बाहर कर दें।
9. किचेन में एक सूती कपड़ा भींगा कर हमेशा रखें।
10. एक बाल्टी / मग के साथ पानी भी रखें।
11. ए.बी.सी. अग्निशमन यंत्र दो के.जी. का अपने किचेन में या दरवाजे पर रखें।
12. चुल्हे पर उबलते हुए चाय, दूध आदि को छोड़कर किचेन से बाहर न जाएें।

अग्निशामक यंत्र चलाने वाले ध्यान दें

1. **वाटर CO2 का उपयोग** तेल या बिजली के आग पर न करें। इससे आपके जान को खतरा है। इसका प्रयोग लकड़ी, कपड़े, पुआल की आग पर ही करें।
2. **तेल की आग के लिए** फोम बेस्ड अग्निशामक यंत्र या ए.बी.सी. अग्निशमन यंत्रों का ही उपयोग करें।
3. **बिजली की आग के लिए** ए.बी.सी. या CO2 का अग्निशमन यंत्र का प्रयोग करें।
4. **कम्प्यूटर या इलेक्ट्रोनिक सामानों की आग पर** CO2 का उपयोग बेहतर है। इससे एक ओर आग भी बुझ जायेगी तथा दूसरी ओर उपकरण की भी अधिक क्षति नहीं होगी।

छोटी या बड़ी वाहन चलाने वाले आग से होशियार

1. गाड़ी की वायरिंग टाइट रखें एवं फायर प्रुफ टेपिंग करें। बैटरी का शॉकेट ठीक से कसें।
2. अपनी गाड़ी में CO2 या ABC टाइप का एक केजी का एक अग्निशमन यंत्र अवश्य रखें।
3. Heat Meter पर हमेशा ध्यान रखें। इंजन ज्यादा गर्म हो तो गाड़ी को साइड कर इंजन चालू रखते हुए रेडिएटर में ठंढ़ा पानी दें।

दूकान में अग्नि आपदा से सावधानी

1. अपने दूकान की वायरिंग सही क्षमता वाले बिजली के तार से करें।
2. दूकान में पूजा करते समय अगरबती, आरती सावधानी से जलावें और सुरक्षित जगह पर रखें।
3. दूकान बंद करते समय सभी बिजली के स्वीच को बंद कर दें।
4. अपने दुकान में स्मॉक डिटेक्टर यंत्र अवश्य लगावें।
5. ए.बी.सी. टाईप या CO2 अग्निशमन यंत्र चेक कर ही रखें।
6. दुकान को किराया पर लेने के पहले अग्निशमन दस्ता की जानकारी अवश्य लें।

पेट्रोल पम्प पर आग से सावधानी

1. पेट्रोल पम्प पर प्रत्येक आउटलेट पर 9 के.जी. या 10 के.जी. का एक ए.बी.सी. या डी.सी.पी. टाईप अग्निशमन यंत्र रखें।
2. सुखी बालू भरी 8 अद्द बाल्टी स्टैण्ड पर टांग कर रखें।
3. पेट्रोल पम्प कैम्पस पर किसी भी प्रकार का फायर वर्क न करें।
4. पेट्रोल लेते समय गाड़ियों को स्टार्ट न रखें।
5. पम्प स्टोरेज टंकी से हवा निकलने वाले भल्ब को हमेशा साफ करते रहें।
6. महीने में एक बार पेट्रोल पम्प पर फायर ड्रिल करें।
7. टैंकर से अन्डर ग्राउंड टैंक में पेट्रोल/डीजल भरने से पूर्व यह सुनिश्चित करें कि उचित अर्थिंग कर ली गयी है।
8. पेट्रोल पम्प के समस्त कर्मियों को अग्निशामक यंत्रों के प्रयोग विधि बतावें।
9. पेट्रोल पम्प, पेट्रोल टैंक में विद्युत लाइन फ्लेम प्रूफ होना चाहिए।
10. पेट्रोल पम्प के परिसर में कहीं पर पेट्रोल यदि किन्हीं कारण से गिर गया हो तो उस पर सूखा बालू डालकर सफाई करवा दें।
11. पेट्रोलियम पदार्थो एवं उसके वाष्प को नाली में न जाने दें।
12. धूम्रपान निषेध का बोर्ड लगाएँ।

सिनेमाघर मे आग से सावधानी

1. क्षमता के अनुसार दो से अधिक निकास द्वार रखें। कुर्सियों के बीच पर्याप्त दूरी रखें।
2. छत पर पानी टंकी की पाईप लाईन वाली अग्निशमन प्रणाली की व्यवस्था रखें।
3. प्रवेश एवं निकास के दरवाजा बाधा रहित हो।
4. स्मॉक डिटेक्टर/वीम डिटेक्टर/फायर एलार्म रखें।
5. दर्शक दीर्धा में ए.बी.सी. टाईप अग्निशमन यंत्र क्षमता के अनुसार पर्याप्त संख्या में रखें।
6. प्रोजेक्टर रूम एवं इलेक्ट्रीक पैनल पर CO_2 टाइप का अग्निशमन यंत्र रखें।
7. शो समाप्त होते समय सभी दरवाजे को खोल दें।
8. सभी दरवाजों पर निकास द्वार Exit ग्लो साइन बोर्ड लिखें जो अंधेरे में भी दिखाई दें।
9. आपातकालीन रोशनी की व्यवस्था रखें।
10. सिनेमा हाल के अंदर धूम्रपान न करें।
11. सिनेमा हाल में ज्वलनशील पदार्थो को न ले जायें।
12. आग लगने पर निर्धारित निकास मार्ग का प्रयोग करें।
13. आग लगने पर धैर्य रखे और जल्द से जल्द सिनेमा हाल को खाली कर दें।
14. सिनेमा घरों में इमरजेंसी लाइट एवं फुट लाइट की व्यवस्था होनी चाहिए।
15. आग लगने की सूचना फायर कंट्रोल तथा पुलिस कंट्रोल रूम को दी जा सकती है। दोनों कंट्रोल रूम का दूरभाष नंबर भी तख्ती पर टॉगें।

फ्लेट खरीदने वाले कृपया सावधान

1. आप के अपार्टमेंट में छत पर आग बुझाने के लिए अलग से पानी की टंकी है कि नहीं।
2. प्रत्येक फ्लोर पर कम–से–कम 15 मीटर का लपेटने वाला पाइप नोजल के साथ रखा गया है कि नहीं?
3. आग की सूचना देने वाले यंत्र (अलार्म) लगा है कि नहीं?
4. अपार्टमेंट में कम–से–कम दो सीढ़िया हैं कि नहीं?
5. बिजली पैनल के पास CO_2 टाइप का अग्निशमन यंत्र है कि नहीं?
6. भवन खरीदने के पहले भवन में अग्नि सुरक्षा एवं अनापति प्रमाण पत्र के बारे में अवश्य जानकारी लें।

आग

याद रखें

- जलती हुई सिगरेट इधर उधर न फेकें।
- जलती हुई मोमबत्ती व धूपबत्ती को ऐसी सतह पर रखें जो आग न पकड़ सके।

आग लगने पर अगर आप घर से बाहर निकल रहे हों:

- घर से बाहर आने के लिए बालकॉनी का प्रयोग न करें। ऊपर की मंजिल पर रहे रहे लोग नीचे उतरने के लिए लिफ्ट का नहीं बल्कि सिर्फ सीढियों का प्रयोग करें।
- आपातकालीन सेवा, 101 को तत्काल संपर्क करें। अगर अग्निशमन यंत्र चलाना आता हो तो जरूर प्रयोग करें।
- अगर कपड़ों में आग लगी हो तो दौड़ें नहीं, बल्कि जमीन पर लेट जाएं और लुढ़कें।
- शरीर पर आग लगने पर आग बुझाने के लिए हमेशा सूती कंबल (दुलाई, मोटी चादर) का प्रयोग करें।

आग लगने पर अगर आप बिल्डिंग के अन्दर फंसे हों :

- सावधान एवं शांत रहें, भगदड़ न मचाएं।
- अपने और आग के बीच में सारे दरवाजे बंद कर दें दरवाजों के गैप को भरने के लिए डक्ट टेप का प्रयोग करें या फिर उसमें तौलिये, पुराने सूती कपड़े या चादर ठूंस दें।
- यदि संभव हो तो ऊपर और नीचे की खिड़कियां खोल दें ताकि धुआ बाहर निकल सके और ताजी हवा भीतर आ सके।
- अगर संभव हो तो अपने और आग के बीच में सारे दरवाजे बंद करते हुए निचली मंजिलों की ओर ही चलें तथा अपने मुंह और नाक को गीले रूमाल से ढक लें।
- बच्चे और अन्य असहाय लोगों को पहले हटाएं।

आग से सुरक्षा के उपाय

आग बहुत तेजी से फैलती है और आग से मृत्यु भी हो सकती है ।

आग का सामना करने के लिए तैयार रहें

1. आपदा के समय घर से बाहर निकलने की योजना पहले से तैयार रखें और परिवार के सभी सदस्यों को इसकी जानकारी दें।
2. आँखें बन्द कर के बाहर जाने के रास्ते पर निकलने का नियमित अभ्यास करें । बाहर निकलने का रास्ता हमेशा खाली रखें।
3. गोदाम एवम् कार्यस्थलों पर कूड़ा जमा न होते दें। ज्वलनशील सामग्रियों को अग्निरोधी डिब्बों में बंद रखें/व्यर्थ संग्रह ना करें।

आग से होने वाले हादसों को थोड़ी सी सावधानी से टाला जा सकता है

1. रसोई घर में कार्य करते समय अतिरिक्त सावधानी बरतें। इस्तेमाल के बाद गैस के सिलिण्डर को तुरंत बंद करने का नियम बना लें।
2. इस्तेमाल के बाद बिजली के उपकरणों को बन्द कर दें तथा प्लग को स्विच बोर्ड से निकाल दें। घर के पुराने तारों, टूटी फिटिंग आदि को बिजली मिस्त्री को दिखा कर दुरूस्त करवाएँ। बिजली के तारों पर जरूरत से ज्यादा लोड ना डालें । स्विच के एक ही प्वाइंट पर ज्यादा भार न डालें।
3. हीटर को कपड़ों, परदों एवं अन्य ज्वलनशील पदार्थों से कम से कम तीन फीट की दूरी पर रखें।
4. बच्चों को आग से बचने की सावधानियाँ बताएँ। मिट्टी का तेल, गैस सिलिण्डर जैसे ज्वलनशील पदार्थों एवं हीटर, आयरन, हेयर ड्रायर जैसे बिजली के उपकरणों को बच्चों की पहुँच से दूर रखें।
5. अपने घरों, विद्यालयों एवं कार्यालयों में अग्निशामक यंत्रों को चालू हालत में रखें और इनका प्रयोग करना सीखें।

आग लगने के बाद क्या करें

1. खड़े ना रहें। मुंह को ढँककर जमीन पर लेट जाएँ और रेंगते हुए चलें।
2. शरीर के कपड़ो में आग लगने पर कभी दौड़ें नहीं बल्कि जमीन पर लेट कर बार–बार पलटे, ताकि आग बुझ जाये।

आग से बचाव की जानकारी

आग से सुरक्षा एवं बचाव की आम जानकारी :–

- ❖ आग से बचाव की आपात योजना बनाएं और सुनिश्चित करें कि आपके परिवार के सभी सदस्यों को पता हो कि आग लगने की स्थिति में उन्हें क्या करना चाहिए।
- ❖ अपने परिवार के सदस्यों के लिए घर के बाहर मिलने का ऐसा सुरक्षित स्थान चुनें जहां आपात स्थिति के दौरान एकत्र हुआ जा सके।
- ❖ अपने परिवार के अन्य सदस्यों को आग लगने पर "आग,आग,आग!" चिल्लाने अथवा सीटी द्वारा संकेत करने का अभ्यास कराएं।
- ❖ सोते समय हमेशा बेडरूम के दरवाजे बंद रखें। इससे आग की जानलेवा तपिश और धुआं बेडरूम से बाहर रहेगा और आपको बचाव का अतिरिक्त समया मिल जाएगा।
- ❖ आग लगने पर एक–एक पल महत्वपूर्ण होता है। इसलिए, कपड़े पहनने, पशुओं और कीमती सामान को ढुंढने में अपना समय बर्बाद न करें फौरन बाहर निकल जाएं।

तैयार रहें और बचाव की योजना बनाएं

- ❖ अपने घर, स्कूल, संस्थान अथवा कार्यालय के लिए बचाव योजना बनाएं।
- ❖ आग लगने पर नीचे जमीन पर लेटकर निकलने और भवन को खाली कराने की अभ्यास करें।
- ❖ कपड़ों पर लगी आग को बुझाने के लिए रुकें व जमीन पर लेटकर रोल होने का अभ्यास करें।
- ❖ सुनिश्चित करें कि सभी अग्निशमन उपकरण उचित स्थान पर लगे हों और चालू हालत में हों।

आग से बचाव की अतिरिक्त जानकारी

- ❖ आग सुलगने अथवा जलने का पता लगने के लिए धुएं का पता लगाने बाले उपकरण लगाएं।
- ❖ आग लगने पर आपातस्थिति के बाद सबसे पहले यदि कोई जल गया हो तो उसके प्राथमिक उपचार की व्यवस्था करें और घायल व्यक्ति को अस्पताल अथवा डॉक्टर के पास ले जाने की व्यवस्था करें।
- ❖ खाना पकाने के स्थान से ज्वलनशील वस्तुओं को दूर रखें और खाना पकाते समय छोटे और टाइट फिटिंग वाले कपड़े पहनें।
- ❖ यदि उपकरण से धुआं निकल रहा हो अथवा जलने की बदबू आ रही हो तो फौरन प्लग निकाल दें और इसकी मरम्मत करा दें।
- ❖ यदि कोई जल गया हो तो तुरंत घाव पर 10–15 मिनट तक ठंडा पानी डालें। यदि कोई गंभीर रूप से जल गया हो अथवा झुलस गया हो तो तुरंत डॉक्टर की सलाह लें।

बिजली से लगने वाली आग से बचाव के लिए सावधानियां

आग लगने की दुर्घटना के प्रमुख कारणों में बिजली एक प्रमुख कारण है।बिजली शॉर्ट–सर्किट अत्यधिक गर्मी पैदा होने, ओवरलोडिंग, घटिया उपकरणों के उपयोग, अवैध ढंस से बिजली के तार लगाने, गलत तरीके से की गई बिजली की वायरिंग, लापरवाही और अज्ञानता आदि के कारण 60: मामले में बिजली से आग लग जाती है यदि आग से बचाव की सावधानियों का समुचित ढंग से पालन नहीं किया जाये तो सह आग गंभीर और जानलेवा हो सकती है पार्याप्त अग्निरोधी सावधानियां बरत कर इस प्रकार की आग लगने की दुर्घटनाओं को कम किया जा सकता है।

इस पुस्तिका से आपको अपने घर के अंदर बिजली के कारण जोखिम वाले प्रमुख क्षेत्रों के बारे में पता चलेगा और आपको यह बताया जायेगा कि आप किस प्रकार आग की रोकथाम कर सकते हैं।

1. प्लग और फ्लेक्सेज

- कुछ विद्युत उपकरणों का डिज़ाइन ऐसा होता है जिन्हें हर समय ऑन रखना पड़ता है। वि. निर्माता द्वारा दिये गये अनुदेशों की जांच कर ले अथवा यदि आपको इस बारे में संदेह हो तो उस दुकान में जा कर पता कर लें जहां से आपने उसे खरीदा है। अन्य सभी विद्युत उपकरणों के स्विच ऑफ कर देने चाहिए और उसके प्लग हटा देने चाहिए, जब इस्तेमाल में न हों। प्लग को सावधानी पूर्वक निकालें, उसके, तारों को खींचकर नहीं निकालें।
- भारतीय मानकों का पालन करने वाले थ्री पिन प्लग का प्रयोग करें जिसमें आई. एस. आई. का निशान हो।
- एक ही सॉकेट में बहुत सारे एडॉप्टरों का उपयोग करने से उस पर अधिक लोड पड़ता हैं जिसके कारण वह बहुत गर्म हो जाता है और आग पकड़ लेता है। उत्तम गुणवत्ता वाला एडॉप्टर प्रयोग करें और यह सुनिश्चित करें कि उसमें सही फ्यूज लगा हो।

2. प्लग और तार लगाना

तार के रंगों के बारे में अच्छी तरह से समझ लें और यह ध्यान रखें कि प्लग को फिट करते समय विनिर्माताओं. द्वारा दिये गए अनुदेशों को पूरी तरह से पालन किया गया हो।

3. फ्युज/एमसीबी

प्रयोग में लाये जा रहे उपकरणों के लिए हमेशा सही फ्यूज/एमसीबी का इस्तेमाल करें और विनिर्माता के अनुदेशों का पालने करें।

4. खाना पकाने के उपकरण

हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि सॉसपेन या कड़ाही सुरक्षित स्थिति में रखी गई है। केतली और ओस्टरों जैसे विद्युत उपकरणों के तारों को खुली आग से उचित दूरी पर रखें और चाय पकड़ने वाले तौलिए आदि को कभी भी उन उपकरणों पर सूखने के लिए नहीं छोड़े। स्विच ऑन करने के बाद कड़ाही को वैसे ही नहीं छोड़ दें और विशेष कर तेल का वसा का उपयोग करते समय चिप पैन पर ध्यान दे। यह सुनिश्चित करें कि ओवन का प्रयोग करने के बाद उसके स्विच को ऑफ कर दिया गया है।

5. चेतावनी

- चेतावनी के संकेतों को पढ़ें।
- खतरनाक वायरिंग की जांच करें।
- गर्म प्लगों और सॉकेटों की जांच करें।
- ऐसे फ्यूज जो बिना कारण के उड़ जाते हैं, की जांच करें।
- बिजली से निकलने वाली चिंगारी की जांच करें।
- सॉकेटों और प्लगों पर झुलसने का चिह्न पड़ जाते है । यदि आपको इस प्रकार के खतरनाक चिह्न कहीं दिखें तो अपने इलेक्ट्रिशयन से घर की वायरिंग की पूरी तरह से जांच करने को कहें।

6. बिजली का बलैंकेट

- दुर्घटनावश ब्लैंकेटो के स्विच ऑन हो जाने के कारण कई बार आग लग जाती है और लोगों की मृत्यु हो जाती है। सभी विद्युत उपकरणों के मामलों में यह महत्वपूर्ण है कि आप विनिर्माता के अनुदेशों का पालने करें। बिस्तर में सोने के लिए जाते समय यह देख लें कि ब्लैंकट स्विच ऑफ है या नहीं और इस सम्बन्ध में अनुदेशों की जांच कर लें।
- अंदर लगायी जाने वाले ब्लैंकेट हमेशा ही पलंग से बंधे होने चाहिए और सोने से पूर्व उसका स्विच आफ कर दिया जाना चाहिए। सभी प्रकार के इलेक्ट्रिक ब्लैंकेट को सूखा और सीधा रखना चाहिए तथा प्रत्येक दो–तीन वर्षों में एक बार उनकी सर्विसिंग होनी चाहिए। जिस दुकान से आपने उसे खरीदा है वह आपको इस सर्विसिंग व्यवस्था के बारे में बता सकते हैं।

7. हीटर

- यह ध्यान रखें कि आप आग सेंकने के लिए हीटर के पास बिल्कुल सट कर नहीं बैठें। ऐसा करने पर आपके कपड़े या आपकी कुर्सी में आसानी से आग लग सकती है, विशेषकर तब जब आप बैठे–बैठ से रहे हों।
- हीटर को हमेशा ही सुरक्षित स्थान पर रखा जाना चाहिए, जहां उससे कोई चीज बार–बार न टकराये और वह बार–बार लड़खड़ा कर नहीं गिरे। हीटर को फर्नीचर और परदे तथा गद्दे जैसी मुलायम बस्तुओं से दूर रखें। हीटर को ऐसे स्थान पर रखें जहां उस पर इस प्रकार की वस्तुएं न गिरे। हल्के हीटरों को कभी भी पलंग से सटा कर नहीं रखा जाना चाहिए और न ही उससे कपड़े सुखाने चाहिए। खुले में आग सेंकते समय यह ध्यान रखें कि सभी हीटरों को सुरक्षित घेरे में रखा गया है। यदि आपके घर में छोटे–छोटे बच्चे हों तो आप यह सुनिश्चित करें कि आपके हीटर के चारों ओर सूरक्षित जाली लगी हो।

क्या करें

- आई. एस आई प्रमाणित उपकरणों का प्रयोग करें।
- सही रेटिंग वाले गुणवत्तापूर्ण फ्यूजों, छोटे–छोटे सर्किट ब्रेकरों और अर्थ लीकेज सर्किट ब्रेकरों का प्रयोग करें।
- एक उपकरण के लिए एक ही सॉकेट का प्रयोग करें।
- आग प्रभावित क्षेत्रों की बिजली आपूर्ति के स्विच को ऑफ कर दें।

- फ्यूज और स्विचों को धातु के बॉक्स के ऊपर फिट किया जाना चाहिए जिससे आग से बेहतर सुरक्षा मिलती है।
- टूटे हुए प्लगों और स्विचों को तत्काल बदल दें।
- बिजली के तारों को गर्म और भीगी सतहों से दूर रखें।
- उपकरणों को उपयोग में लाने के बाद उनके स्विच ऑफ कर दें और सॉकेट से प्लगों को निकाल दें।
- लम्बे समय के लिए घर को छोड़कर जाते समय मेन स्विच को ऑफ कर दें।

क्या नहीं करें

- घटिया किस्म के सामानों, उपकरणों का प्रयोग नहीं करें।
- अस्थायी–वायरिंग कभी न कराएं या वायरिंग में जोड़ो को कभी खुला न छोड़े।
- कालीन, चटाई या पायदान के अंदर से तारों को नहीं बिछाएं। तार टूट सकते हैं, जिनके कारण शॉर्ट सर्किट हो सकता है।
- उपकरणों के कॉड्र्स को कभी लटका नहीं रहने दें। सॉकेट में कभी भी नंगा तार नहीं घुसायें।

विकलांगों के लिए अग्नि सुरक्षा के उपाय

अग्नि सुरक्षा व्यवस्था और पूर्व योजना से कई जानों को बचाया जा सकता हैं यदि आपके घर में आग लग जाए तो आपका बचना इस बात पर निर्भर करता है कि आप कितनी जल्दी सुरक्षित रूप से बाहर निकल आते हैं।
यह पुस्तिका आपको यह परामर्ष देती है कि आग को कैसे रोकें और आग लगने पर स्वयं की रक्षा किस प्रकार करें।

शुरू में ही सतर्क होने के लिए स्मोक डिटेक्टर लगाना –

- शुरू में ही सतर्क करने के लिए लगा स्मोक अलार्म आपको सावधान कर देता है जिससे आपको मूल्यवान कुछ मिनटों को समय मिल जाता है जो आपको और आपके परिवार को सुरक्षित बाहर निकालने में मददगार सावित होता है ।
- स्मोक अलार्म बाजार में उपलब्ध है और इन्हें लगाना सरल हैं। ऐसे अलार्म को चुनें जो भारतीय मानकों को पूरा करते हों।
- अलार्म को कैसे और कहां लगाएं, इसके लिए विनिर्माताओं के अनुदेषों का पालन करें।

श्रवण दोष से ग्रसित लोगों के लिए स्मोक अलार्म–

- पारंपरिक स्मोक अलार्म को सुनने में अक्षम लोगों के लिए विषेष किस्म के साधन उपलब्ध हैं जो श्रवण संकेत के स्थान पर कंपायमान पैड या फ्लैष लाइट का प्रयोग करतें हैं कंपायमान पैड अलार्म विषेषकर आंखों और कान दोनों से लाचार लोगों के लिए उपयोगी होता है।
- आपके घर में आग लग जाने पर आपको अंधेरे और कठिन परिस्थितियों में बाहर निकलना पड़ सकता है। यदि आपने बाहर निकलने के मार्ग तथा गंतव्य स्थल के बारे में पहले से योजना बना रखी हो तो आग से बाहर निकलना आसान हो सकता हैं
- यदि आपको चल–फिर सकने में गंभीर कठिनाई है तो आपको अपना बेडरूम भूतल पर रखना चाहिएं यदि व्यावहारिक हो तो आपना वेडरूम बाहर निकलने वाले द्वार के समीप के स्थान में बनाएं।
- यदि आपको बच निकलने में सहयोग की जरूरत हो, तो आपके बिस्तर के पास ऐसे साधन जैसे बजर, इंटरकॉम या टेलीफोन मौजूद होने चाहियें जिससे आप फौरन सहायता से सीधे टेलीफोन लाइन से स्वतः ही सहायता मांगी जा सकती है या कर्मचारी की मौजूदगी वाले नियंत्रण कक्ष को सिग्नल भेजा जा सकता है।

आग लगने पर क्या करें–

- यदि संभव हो तो जिस कमरे में आग लगी हो उसके दरवाजे बन्द कर दें और घर से निकलते समय सारे दरवाजों को बन्द कर दें। इससे आग और धुआ फैलने से रोकने में मदद मिलेगी।
- बन्द दरवाजे को खोलने से पूर्व उसे हथेली के पीछे बाले भाग से छूकर देखें। यदि वह गर्म हो तो उसे नहीं खोलें– उस तरफ आग लगी हो सकती है।
- यथासंभव जल्दी से सभी को बाहर निकाल दें। कीमती सामानों को बटोरने की कोषिष नहीं करें। यथासंभव सुरक्षित तरीके से बाहर निकलने की कोषिष करें और घबराएं नहीं। यदि आप आग लगने पर मदद का इन्तजार करने की बजाय बाहर निकलने की योजना बना लें, तो इससे आपका फायदा होगा।
- फायर ब्रिगेड को टेलीफोन करें। आग लगने वाले स्थान का स्पष्ट और सही

- घर के भीतर तब तक नहीं जाएं जब तक अग्निषामक अधिकारी यह नहीं कह दें कि भीतर जाना सुरक्षित हैं

यदि आप आग से घिर चुके हों तो–

- शांतचित्त रहने की कोषिष करें।
- यदि आप लपटों या धुएं के कारण दरवाजे का उपयोग करने में असमर्थ हैं तो, दरवाजे को बन्द कर दें और खाली पड़े स्थानोंको तौलिया या चादर से बन्द कर दें। इससे कमरे में दुएं को फैलने से रोकने में मदद मिलेगी।
- खिड़की के पास पहुचंने की कोषिष करें । यदि कमरे में धुआं भर गया हो तो फर्ष पर लेट जाएं, जहां सांस लेना आसान होता है क्योंकि धुंआ ऊपर उठ जाता है।
- खिड़की खोलकर दूसरे लोगों का ध्यान आकर्षित करें जो फायर बिग्रेड को बुला सकते हैं। फायर बिग्रेड के पहुंचने का इंतजार कीजिए।
- फायर बिग्रेड मिनटों में पहुंच सकता है। यदि आप पर तत्काल खतरा आ गया हो और आपका कमरा भूमि से बहुत अधिक ऊंचा नहीं हो तो नीचे तकिया या गद्दा गिरा दें और खिड़की से उस पर कूद जाएं। यदि आपके लिए संभव हो तो पहले अपने पैरों को बाहर निकालें और कूदने से पूर्व अपनी बांह पूरी तरह से नीचे की ओर मोड़ लें।

आग को कैसे रोकें....

- ऐसे सभी विद्युत उपकणों के प्लग निकाल दें जिनका उपयोग नहीं किया जा रहा हों।
- यह सुनिष्चित करें कि कोई सिगरेट का टकड़ा जल नहीं रहा हो।
- ऐष ट्रे खाली करते समय देख लें कि उसमें कोई जलता हुआ टुकड़ा न हो।
- खुली आग के चारों ओर घेरा लगा दें। पोर्टेबल हीटरों को बुझा दें।
- अप्रयुक्त कमरे के दरवाजे को बन्द रखें।

पटाखे चलाने में सावधानियाँ

पटाखों से सुरक्षा

दिवाली, शादी और अन्य शुभ अवसरों पर आतिषबाजी की परम्परा है और ऐसा करना इन समारोहों का अभिनन अंग है। लेकिन कई मामलों में सुरक्षा संबंधी सावधानियां बरते बगैर अंधाधुंध पटाखे चलाने से शुभ अवसर गमगीन अवसर में बदल जाते हैं और हंसी की जगह आंसू ले लेते हैं। कुछ सावधानियां और सुरक्षा संबंधी सतर्कता बरतने मात्र से इस प्रकार की दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है और समारेह को और अधिक खुषनुमा और आनंददायक बनाया जा सकता हैं। आतिषवाजी करने और आतिषबाजी सामान/पटाखें की दुकान चलाते समय नीचे दी गई सुरक्षा संबंधी कुछ सतर्कताएं बरतनी चाहिए।

क्या करें–

1ण आतिषबाजी के सामान पर लिखे अग्नि सुरक्षा संबंधी अनुदेषों और सावधानियों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
2ण पटाखे चलाते समय हमेषा एक बाल्टी पानी और थोड़ा सा रेत पास में रखें।
3ण प्रयोग में लाए जा चुकी/बुझ चुकी फुलझड़ियों, रॉकेटों जैसी आतिषबाजी सामग्री को हमेषा ही पानी की बाल्टी या सूखी रेत में डाल दें।
4ण थोड़ी दूर से और अपने चेहरे को अलग हटाकर पटाखे जलाएं।
5ण उड़ते हुए पटाखों को घर के भीतर आने से रोकने के लिए अपने घर की खिड़कियों और दरवाजों को ठीक से बन्द कर दें।
6ण केवल मानक तरीके से बनाए गए पटाखों का ही उपयोग करें।
7ण बच्चे जब पटाखे चलायें तब किसी बड़े का वहां उपस्थित रहना आवष्यक है।
8ण खुले मैदानों और खुले स्थानों पर पटाखे चलाना सुरक्षित है। घास–फूस से बने घरों और घास–फूस के ढेरों के पास रॉकेट, फ्लावर पॉट्स और अन्य उड़ने वाले पटाखें नहीं छोड़ने चाहिए।
9ण फुलझड़ी जैस पटाखे को शरीर से अलग हटाकर जलाना चाहिए।
10ण पटाखे चलाते समय कसे हुए सूती वस्त्र पहनें।
11ण सुरक्षा के लिए जूता, चष्मा पहनें।
12ण पटाखे चलाते समय बूढ़े लोगों, बच्चों और महिलाओं का ध्यान रखें।
13ण यदि दुर्घटनावष आप जल जायें तो जले हुए स्थान पर तब तक ठंडा पानी डालते रहिए जब तक दर्द कम नहीं हो जाये और डॉक्टर को दिखायें।
14ण जरूरत पड़ेने पर स्थानीय फायर ब्रिगेड की सहायता लें।

क्या सब नहीं करें–

1ण किसी सयाने व्यक्ति की अनुपस्थिति में बच्चों को कभी पटाखें नहीं जलाने दें।
2ण अधजले पटाखे को दुबारा से कभी नहीं जलायें।
3ण मकान के बिल्कुल सटकर पटाखे नहीं जलायें।
4ण फर्ष पर या पटाखें के समीप जलते तेल के दीये, अगरबत्ती या मोमबत्ती कभी नहीं छोडें।
5ण मकान में या मकान के आस–पास कबाड़ या कोई अन्य ज्वलनषील वस्तु जमा नहीं करें।
6ण घर के अन्दर कभी भी पटाखा नहीं चलाने दें।

7ण जल रहे पटाखों के बीच कभी भी हाथ में फ्लावार पॉट्स एटम बम, लड़ी आदि नहीं रखें।

8ण खतरनाक और तेज आवाज करने वाले पटाखों के पास कभी भी बच्चों को नहीं जाने दें।

9ण पटाखे की दुकान के पास पटाखे कभी नहीं जलायें।

10ण खुले स्थानों पर अंधाधुंध जले हुए पटाखें नहीं फेंके।

11ण अधजले पटाखों को दुबारा नहीं जलायें या उन्हें सही करने का प्रयास न करें।

12ण बन्द डिब्बों में कभी भी पटाखे नहीं जलायें।

13ण संकरी जगह पर रॉकेट नहीं चलाएं।

आतिषबाजी/पटाखे की दुकान–

1ण पटाखे की दुकान बनाने में ज्वलनषील सामग्री का उपयोग नहीं करें।

2ण पटाखे की दुकानों के बीच सुरक्षित दूरी बना कर रखें।

3ण केवल प्राधिकृत गुणवत्ता वाले पटाखे ही रखें।

4ण दुकान के समीप किसी को भी पटाखे नहीं चलाने दें।

5ण दुकान में मोमबत्ती, लाइटर, दियासलाई नहीं जलायें।

6ण दुकान के अन्दर धूम्रपान नहीं करें।

7ण दुकान में क्षतिग्रस्त या खुले हुए बिजली के तार को नहीं लगाएं।

8ण पटाखे की दुकान के समीप बिजली के बल्बों और पटाखों के बीच सुरक्षित दूरी रखें।

9ण स्थानीय फायर बिग्रेड द्वारा की गई सिफारिष के अनुरूप पानी की बाल्टी, रेत और अग्निषामक तैयार रखें।

आपदाओं से कैसे बचें ?

भूकंप

यदि आप घर / इमारत के अंदर है :

- झुकें, कवर करें और पकड़े– किसी मेंज या मजबूत फर्नीचर के नीचे झुकें, एक हाथ से सिर को कभर करें और दूसरे हाथ से फर्नीचर को पकड़े ।
- मार्ग में खड़े न हो ।
- खिड़कियों, आईनों, किताबों की अलमारियों और अन्य असुरक्षित भारी वस्तुओं से दूर रहें ।
- बाहर के तरफ न भागें ।

यदि आप घर के बाहर है :

- खुले मैदान की ओर दौड़े ।
- मकान, ऊँची दिवार, विद्युत तार आदि ज़ैसे संरचनाओं से दूर भागें, जो गिर सकते है ।
- यदि आप किसी ऊँचे मकान के नजदीक या संकीर्ण सड़क पर हो तो पोर्च/ओसारा या चौखट के नीचे आश्रय लें ताकि गिरते मलवे से बच सके ।

यदि आप स्टेडियम, पण्डाल, सभागार में है :

- बाहर की तरफ न भागे । अपनी जगह पर रहते हुए अपने सिर को हाथ से ढक लें । झटके रूक जाने तक धैर्य बनाये रखें । तत्पश्चात व्यवस्थित रूप से बाहर निकले ।
- बच्चों, बूढ़ों एवं विकलांगों को पहले बाहर निकलने दें ।
- भगदड़ न मचायें ।

भूकम्प के झटके रूक जाने के बाद :

- यदि आप स्वयं घायल है तो पहले अपना उपचार करायें और यदि आप सुरक्षित है तो दूसरों की मदद करें ।
- अपना धैर्य और संयम बनाये रखें एवं प्रभावित व्यक्तियों की मदद करें ।
- अगर कहीं आग लगी हो तो तुरंत अग्निषमन सेवा (101) एवं पुलिस नियंत्रण कक्ष (100) को सूचित करें ।

आग

याद रखें

- जलती हुई सिगरेट इधर–उधर न फेंके ।
- जलती हुई मोमबत्ती व धूपबत्ती को ऐसी सतह पर रखें जो आग न पकड़ सके ।

आग लगने पर अगर आप घर से बाहर निकल रहें हो :

- घर से बाहर आने के लिए बालकॉनी का प्रयोग न करें । ऊपर की मंजिल पर रह रहे लोग नीचे उतरने के लिए लिफ्ट का नहीं बल्कि सिढ़ियों का प्रयोग करें ।
- आपातकालीन सेवा, 101 को तत्काल संपर्क करें । अगर अग्निषमन यंत्र चलाना आता हो तो जरूर प्रयोग करें ।
- अगर कपड़ों में आग लगी हो तो दौड़े नहीं बल्कि जमीन पर लेट जाए और लुढ़के ।
- शरीर पर आग लगने पर आग बुझाने के लिए हमेषा सुती कम्बल (दुलाई, मोटी चादर) का प्रयोग करें ।

आग लगने पर अगर आप बिल्डिग के अंदर फॅसे हो :

- सावधान एवं शांत रहें, भगदड़ न मचायें ।
- अपने और आग के बीच में सारे दरवाजे बन्द कर दें । दरवाजों के गैप को भरने के लिए डक्ट टेप का प्रयोग करें या फिर उसमें तौलियें, पुराने सुती कपड़े या चादर ठूंस लें ।
- यदि संभव हो तो ऊपर और नीचे की खिड़कियों को खोल दें ताकि धुँआ बाहर निकल सके और ताजी हवा भीतर आ सके ।
- अगर संभव हो तो अपने और आग के बीच में सारे दरवाजे बन्द करते हुए नीचली मंजिलों की ओर ही चलें तथा अपने मुँह और नाक को गीले रूमाल से ढक लें ।
- बच्चों और असहाय लोगों को पहले हटाएँ ।

भगदड़

भीड़–भाड़ वाले स्थानों में ध्यान रखें

ये सुझाव :

- भीड़–भाड़ वाले स्थानों जैसे धार्मिक पूजा स्थल, मेलें, उत्सवों आदि में सावधान रहें व अनुषासित तरीके से चलें ।
- बेवजह शोर न मचायें, अफवाहें न फैलायें और साथ ही दूसरों को भी ऐसा करने से रोकें ।
- यदि संभव हो तो बच्चों, बुजूर्गो व विकलांगों को अधिक भीड़भाड़ वाले स्थानों पर न ले जाय।
- जल्दबाजी न करें । यदि आगे चलता कोई व्यक्ति गिर जाता है तो उसकी सहायता करें ।

भगदड़ की स्थिति में ध्यान रखें ये सुझाव

- भगदड़ मचने की स्थिति में संयम व धैर्य बनाये रखें व यदि संभव हो तो भगदड़ वाले मार्ग से हट जाय ।
- स्थिति सामान्य होने पर घायल व्यक्तियों को रास्ते से उठाकर पास के सुरक्षित स्थान पर ले जाकर उनकी सहायता करें ।
- घायलों के इर्द–गिर्द भीड़ न इकठ्ठी होने दें व हवा आने दें । क्योंकि भगदड़ में अधिकतर लोग दम घुटने से बेहोष हो जाते है ।
- पुलिस व राहत कर्मियों को उनके कार्य में सहयोग करें ।

बम बिस्फोट

- उस स्थान को खाली कर दें और तुरंत पुलिस को सूचित कर दें ।
- किसी भी लावारिस व्यक्ति को छूने की कोषिष न करें ।
- अफवाहों पर ध्यान न दें । अधिकारिक निर्देषों की तरफ ध्यान दें ।
- पीड़ित को किसी खुले स्थान में ले जाने की कोषिष करें ।
- पीड़ितों को अस्पताल ले जाने के लिए आपातकालीन सेवा की मदद लें ।

जीवन रक्षक विधियाँ

सी. पी. आर.

- वायु मार्ग खोलें, पीड़ित की सांस जॉच लें ।
- सांस लेने से पहले यह जांच ले कि मुँह में कुछ न हो ।
- दो बार सांस दें ।
- रक्त संचार जांच लें ।
- रक्त संचार न होने पर छाती पर दबाब दें ।
- व्यस्क और बच्चों में 30 बार दबाब और 2 बार सांस दें । यह विधि जारी रखें ।

सांस अटकना

- पीड़ित को खांसने को कहे यदि वह खांस, बोल या सांस ले सकता है ।
- नाभी से ऊपर पेट पर अंदर और ऊपर की दिषा में झटका दें ।
- पीड़ित के बेहोष होने पर सी.पी.आर. दें ।

दिल का दौरा

- डॉक्टर को बुलाएँ ।
- पीड़ित को आराम करने दें ।
- पीड़ित को एक एसप्रिन (अगर एसप्रिन से एलर्जी न हो तो) दें ।
- पीड़ित की स्थिति का ध्यान रखें ।
- पीड़ित को कुछ भी खाने–पीने न दें ।

काटना तथा डसना

- जानवर को काटने पर घाव को पानी तथा साबुन से धोयें ।
- सॉप के काटने पर घाव व टूनिकेट न बांधे, घाव को न काटे और न ही चूसे । पिड़ित भाग को हृदय के स्तर से नीचे रखें ।
- मधुमक्खी के काटने पर डंक निकाले । घाव पर ठंडी पट्टी लगायें ।
- हर स्थिति में डाक्टर की मदद लें ।

पंडाल अथवा अस्थाई ढांचा बनाते समय अग्नि से सुरक्षा हेतु उपाय (भारतीय मानक ब्यूरो, आई.एस. 8758–1993) एवं अग्निनिरोधक (Fire retardant) पंडाल बनाने की प्रक्रिया/सामग्री उपलब्धता–

1. किसी भी दशा में पंडाल 3 मीटर से कम उँचाई का न लगाया जाये।
2. पंडाल बनाने में सिन्थेटिक सामग्री से बने कपड़े या रस्सी का प्रयोग न किया जाये।
3. पंडाल के चारों तरफ 4–5 मीटर खुला स्थान होना चाहिए, जिससे लोग सुरक्षित बाहर निकल सकें।
4. पंडाल बिजली की लाइन के नीचे किसी भी दशा में न लगाया जाये।
5. कोई भी पंडाल रेलवे लाइन, बिजली के सब स्टेशन, चिमनी या भट्टी से कम–से–कम 15 मीटर दूर लगाया जाये।
6. बाहर निकलने का गेट 5 मीटर से कम चौड़ा न हो और अगर रास्ता मेहराबदार (आर्च) बनाया जाये तो भूमि तल से उँचाई 5 मीटर से कम नहीं होना चाहिए।
7. बाहर निकलने के कम–से–कम दो रास्ते होने चाहिए। जहॉ तक संभव हो सके दोनों रास्ते एक दूसरे के विपरीत दिशा में हो।
8. बाहर निकलने के गेट इस प्रकार समुचित संख्या में बनाये जायें कि किसी भी दशा में पंडाल के किसी भी स्थान से किसी व्यक्ति को बाहर निकलने हेतु 15 मीटर से अधिक दूरी न तय करनी पड़े।
9. कुर्सियॉ दोनों किनारे से 1.2 मीटर जगह छोड़कर लगायी जाये व बारह कुर्सियों के बाद 1.5 मीटर की जगह छोड़ी जाये एवं इसके बाद पुनः बारह कुर्सियां लगाई जा सकती है। कुर्सियों को 10 कतारों के बाद 1.5 मीटर की जगह (गैन्गवे) छोड़ी जाये।
10. कुर्सियों को कम–से–कम चार–चार के समूह में नीचे से बांध कर जमीन में लोहे की छड़ गाड़कर स्थिर कर दिया जाये जिससे भगदड़ के समय वह कुर्सियॉ अव्यस्थित होकर बाहर निकलने के मार्गो को अवरूद्व न कर दें।
11. तारों के जोड़ किसी भी दशा में खुले नहीं होने चाहिए। जहॉ तक संभव हो पोर्सलीन कनेक्टरों का प्रयोग करना चाहिए।
12. ईमरजेन्सी लाइट की व्यवस्था होनी चाहिए।
13. विद्युत का कोई भी सर्किट, बल्ब, ट्यूब लाइट आदि पंडाल के किसी भी भाग से कम–से–कम 15 सेंटीमीटर दूर होना चाहिए।
14. हैलोजन लाइट का प्रयोग किसी भी दशा में पंडाल या अस्थाई निर्माण में नहीं किया जाना चाहिए।
15. पंडाल में अंदर किसी भी दशा में भट्टी का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। अगर करना ही पड़े तो टीन शेड लगाकर किया जाये जो पंडाल से अलग हो।
16. पंडाल अग्नि सुरक्षा हेतु 0.75 लीटर पानी प्रति वर्ग मीटर स्थान हेतु ड्रम या बाल्टियों में सुरक्षित रखा जाये व इसका प्रयोग अग्निशमन के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य में कदापि न किया जाये। कुल पानी की आधी मात्रा पंडाल के अन्दर व आधी पंडाल के बाहर रखी जाये।
17. प्रत्येक 50 वर्गमीटर जगह हेतु कम–से–कम दो बाल्टी पानी व प्रत्येक 100 वर्गमीटर स्थान हेतु फायर एक्सटिंग्यूशर (9 लीटर क्षमता का वाटर टाइप) अग्नि सुरक्षा हेतु उपलब्ध रखा जाये।
18. स्विच गेयर, मेन मीटर और स्टेज के पास विद्युत की आग से सुरक्षा हेतु एक कार्बन डाई आक्साईड गैस एक्सटिंग्यूशर या ड्राई केमिकल पाउडर एक्सटिंग्यूशर लगाया जाये।
19. आतिशबाजी का प्रयोग पंडाल के निकट अथवा उसके अंदर न करें।
20. पंडाल के अंदर तथा निकट धूम्रपान न करें।

22. बहुत बड़े पंडाल व अस्थाई निर्माण के पूर्व अग्निशमन विभाग को सूचित कर उनसे सुझाव प्राप्त करें।

अग्नि निरोधक घोल(Fire Retardant solution) हेतु सामग्री, बनाने का तरीका एवं उपलब्धता–

(क) अग्नि निरोधक घोल हेतु सामग्री की मांग का अनुपात–

1. अमोनियम सल्फेट – 4 भाग (मात्रा से)
2. अमोनियम कार्बोनेट – 2 भाग (मात्रा से)
3. बोरैक्स – 1 भाग (मात्रा से)
4. बोरिक एसिड – 1 भाग (मात्रा से)
5. एलम – 2 भाग (मात्रा से)
6. पानी – 35 भाग (मात्रा से)

(ख) अग्नि निरोधक घोल बनाने का तरीका–

उपरोक्त निर्धारित अनुपात में घोल बनाकर पंडाल के कपड़ों को भींगने हेतु छोड़ देना है। कपड़ा के पूर्ण रूप से भींगने के बाद उसे सुखाकर पंडाल बनाना है। ऐसे पंडाल में आग मुश्किल से लगता है। अगर आग लग भी जाता है तो कपड़ा काफी धीरे–धीरे जलता है और सिकुड़ जाता है तथा उसमें फ्लेम नहीं देता है।

(ग) अग्नि निरोधक सामग्री की उपलब्धता–

सभी सामान केमिकल के दुकान में 500 ग्राम के पैकेट में मिल जाता है। पटना सायंस कॉलेज के पास केमिकल की कई दुकानें हैं। अन्य स्थानों पर भी केमिकल के दुकान उपलब्ध रहते है। 500 ग्राम पैकेट का दर करीब 200–300/– रूपये है।

1.9.16

समादेष्टा, गृह रक्षा वाहिनी–सह–
निदेशक, राज्य अग्निशाम सेवा,
बिहार, पटना।

विद्यालय में अग्नि आपदा, भूकम्प आपदा एवं अन्य आपदा से बचाव हेतु विद्यालय स्तरीय मॉक–ड्रील कार्यक्रम का आयोजन–

इस दिशा निर्देश का उद्देश्य आपदा आने की स्थिति में सुनियोजित, सिलसिलेवार, सुरक्षित ढ़ंग से कम से कम समय में विद्यालय परिसर को खाली (Evacuate) करने के साथ–साथ उपलब्ध संसाधनों और अग्निशामक यंत्र का यथा संभव उपयोग करना है।

जिला के सभी विद्यालयों में (जिला स्तरीय) मॉकड्रील का आयोजन हेतु सामान्य निदेश–

1. मॉक–ड्रील जिले के सभी विद्यालयों में किसी एक निर्धारित तिथि को एवं एक साथ सुनिश्चित किया जाय।
2. जिला स्तर पर सामूहिक मॉक–ड्रील कराने के पूर्व, एक कार्यशाला / प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कराया जाय। इसमें सभी संबंधित नोडल शिक्षक/ शिक्षा पदाधिकारी/ प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी/ जिला शिक्षा पदाधिकारी आदि सम्मिलित हों।
3. जिला स्तरीय कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम में पुलिस विभाग, स्वास्थ विभाग एवं सभी संबंधित अभियंता (PWD Road, PHED, etc.) अग्निशमन विभाग, एन.सी.सी., स्काउॅट एंड गाइड, सिविल डिफेंस और अन्य संबंधित विभाग के सदस्यों को सम्मिलित किया जाय।
4. जिला स्तरीय कार्यशाला में, जिले के सभी विद्यालय में मॉक–ड्रील कार्यक्रम का आयोजन सफलतापूर्वक हो सके, इसके लिए व्यापक तैयारी एवं योजना का निर्माण किया जाय और साथ–ही–साथ आपदा के दौरान क्या करना है, क्या नहीं करना है (Do's and Don'ts) की कार्य योजना बनायी जाय।
5. आगजनी एवं निष्कासन (Fire & Evacuation) हेतु मानक संचालन प्रक्रिया (Standard Operating Procedure- SOP) की प्रति सभी विद्यालयों में उपलब्ध करायी जाय तथा मानक संचालन प्रक्रिया के चरणों (Steps) के अनुसार विद्यालय में मॉक–ड्रील सम्पन्न कराया जाय।
6. सभी संबंधित प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी द्वारा यह सुनिश्चित किया जाय कि प्रत्येक विद्यालय में एक शिक्षक नोडल पदाधिकारी (आपदा प्रबंधन) के रूप में कार्य करेंगे जो इस बात को सुनिश्चित करेंगे कि निरंतर और नियत अवधि पर विद्यालय में मॉक–ड्रिल कराया जा सके।
7. मॉक–ड्रील अभ्यास प्रत्येक तीन महीने पर किया जाना आवश्यक है। आवश्यकता अनुसार इससे पहले भी अभ्यास किया जा सकता है।
8. सभी विद्यालय यह सुनिश्चित करें कि मॉक–ड्रील का रिपोर्ट राज्य समन्वय संस्थान (SCERT/शिक्षा विभाग) आदि को ससमय पहुँचाया जाय।
9. विद्यालय के सभी कर्मचारी एवं सदस्य मॉक–ड्रिल में सम्मिलित हों और इसमें हर संभव सहयोग करें।

आगजनी/भूकम्प से बचाव हेतु सरकारी/निजी विद्यालय स्तरीय मॉकड्रील कार्यक्रम का आयोजन हेतु मानक संचालन प्रक्रिया (SOP)–

1. **विद्यालय में आपदा संबंधी नोडल टीचर को नामित करना–**

   इनकी जबाबदेही होगी कि अग्नि आपदा, भूकम्प आपदा या अन्य किसी भी प्रकार का संभावित आपदा के कारण, आपदा के प्रभाव, आपदा से बचाव के उपाय संबंधी अधिकतम जानकारी रखेंगे। वे संभावित सभी प्रकार के आपदा एवं तत्संबंधी बचाव के उपाय की जानकारी एवं प्रशिक्षण विद्यालय के सभी शिक्षकों /कर्मचारियों / विद्यार्थियों को देंगे। साथ ही कक्षा शिक्षक/कक्षा मोनिटर को विशेष प्रशिक्षण /जबाबदेही देंगे। वे नियमित रूप से मॉकड्रील कराऐंगे एवं सर्वसंबंधित को उपलब्ध निकास/अग्निशामक यंत्र, बालटी (Fire Bucket) आदि के इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण देंगे तथा अन्य आवश्यक जानकारी देंगे।

2. **कक्षा शिक्षक एवं कक्षा मॉनिटर को नामित करना–**

   इनकी जबाबदेही होगी कि वे अग्नि आपदा एवं अन्य आपदा के हर पहलू का जानकारी रखेंगे एवं विद्यार्थियों को तत्संबंधी जानकारी देकर जागरूक करते रहेंगे। वे सुनिश्चित करेंगे कि सभी विद्यार्थियों को सभी निकास द्वार की जानकारी हो, साथ ही जानकारी हो कि आपदा की स्थिति में किस निकास द्वार का प्रयोग किया जायेगा। साथ हीं उपलब्ध अग्निशामक यंत्र/संसाधन एवं उनके इस्तेमाल का तरीका की जानकारी होना सुनिश्चित करेंगे। आपदा की स्थिति में विद्यार्थियों को पूर्व निदेशानुसार कक्षा से बाहर ले जाते हुए सभा स्थल पर पहुँचने में मार्गदर्शन करेंगे।

3. **सभा स्थल (Assembly)का निर्धारण–**

   प्रत्येक विद्यालय में बच्चों के इक्ठ्ठे होने का स्थान सुनिश्चित किया जाय तथा उक्त स्थान में कक्षा के क्रम अनुसार बच्चों का स्थान निर्धारित किया जाय, ताकि यदि कोई आपदा आती है तो वे क्रमबद्व ढंग से एक जगह एकत्रित हो जाये और किसी भी प्रकार के आपदा की स्थिति से उनका बचाव हो सके।

4. **जबाबदेही निर्धारण–**

   आपदा की स्थिति में किनकी क्या जबाबदेही होगी। पूर्व से हीं निर्धारित कर देना है। आपदा की प्रारंभिक जानकारी किन्हीं को मिलने पर वे तत्संबंधी जानकारी नोडल पदाधिकारी/क्लास टीचर को तत्काल हीं देंगे। आपदा की जानकारी मिलने पर आपातकालीन द्वार /रास्ते के प्रयोग करने संबंधी सूचना निरंतर प्रसारित करने, अग्निशामालय/पुलिस थाना को खबर करने की जबाबदेही व्यक्ति विशेष को देना पूर्व निर्धारित होना चाहिए।

5. **त्वरित सूचना प्रदानः–** कोई भी बच्चा अथवा विद्यालय के सदस्य/शिक्षक यदि आग देखे (जो विध्वंशात्मक क्षमता रखता हो) तो इसकी सूचना अतिशीध्र सारे विद्यालय में दें एवं यथा शीध्र पुलिस विभाग और 101 नंबर पर खबर हों।

6. **आपातकालीन द्वार /रास्ते** (Emergency Exit Routes) की जानकारी जन सूचना तंत्र (Public Address System) द्वारा निरंतर दिया जाय।

7. सीढ़ियों से उतरते और चढ़ते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि विद्यार्थी /बच्चे शांति बनाये रखें एवं एक पंक्ति बनाकर रहें। कोई भी एक को छोड़कर आगे बढ़ने (Overtake) की कोशिश न करें। इस दौरान दौड़ना, हल्ला करना और हँसना सख्त मना किया जाय, ताकि किसी भी प्रकार के भगदड़ से बचा जा सके।

8. बच्चे क्रमबद्व होकर (In Line) कक्षा से बाहर आकर सभा स्थल (Assembly) में एकत्रित हों।

9. विशेष सक्षम बच्चों (Differently Abled Children) की सुरक्षाः– विशेष बच्चों के निकलने हेतु विशेष व्यवस्था की जाय, यथा उनके साथ दो सहयोगी बच्चों को लगाया जाय या कक्षा मोनिटर (Class Monitor) यह सुनिश्चित करें कि पहले विशेष सक्षम बच्चों को बाहर निकाला जाय।

10. विद्यालय परिसर में आग लगने की स्थिति में किसी भी व्यक्ति/बच्चे/विद्यार्थी को अंदर जाने की अनुमति न दी जाय। विशेष परिस्थिति में यदि किसी के खोज और बचाव के लिए अंदर जाना हो तो यह सुनिश्चित करें कि अंदर जाने वाला अमुक व्यक्ति वयस्क हो एवं वे अग्निशमन दल के सदस्य के साथ ही अंदर जाय।

11. सभा स्थल (Assembly) पर सुनिश्चित किये जाने वाले कार्यः– सभा स्थल से संबंधित शिक्षक (Assembly In Charge Teacher) अपने स्थान पर उपस्थित हो और यह सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे अपने पूर्व निर्धारित स्थान पर रॉल नंबर के अनुसार क्रमबद्व होकर खड़े है या नहीं। इस समय सभी विद्यार्थियों / बच्चों की उपस्थिति (Attendence Register) में यह सुनिश्चित किया जाय कि कोई बच्चा छूटा तो नहीं (एक भी बच्चा छूटा, सुरक्षा चक्र टूटा)।

समादेष्टा, गृह रक्षा वाहिनी–सह–
राज्य अग्निशमन पदाधिकारी–सह–निदेशक
बिहार, पटना।

आग बहुत तेजी से फैलती है और आग से मृत्यु भी हो सकती है ।

आग से सुरक्षा के उपाय

1. कार्यालय से बाहर आने के लिए बॉलकानी का प्रयोग न करें। ऊपर की मंजिल पर काम कर रहे लोग नीचे उतरने के लिए लिफ्ट का नहीं बल्कि सिर्फ सीढ़ियों का प्रयोग करें।
2. अगर कपड़ों में आग लगी हो तो कभी दौड़े नहीं बल्कि जमीन पर लेट कर बार–बार पलटे, ताकि आग बुझ जाये।

आग लगने से पहले	आग लगने पर
1. अग्निशामक यंत्र का प्रयोग करना सीखें	1. बिजली का मेन स्विच बन्द कर दें
2. बिजली के सॉकेट पर अधिक भार न दें	2. रेत की बाल्टियों एवं अग्निषामक यंत्र का प्रयोग करें
3. आफिस बंद होते समय बिजली के उपकरण बंद करना न भूलें	3. कमरे में धुआ भने पर घुटनों के बल रेंगते हुए निकलें
4. रेत से भरी बाल्टियां तैयार रखें	
5. निकास की योजना एवं अग्निशामक यंत्र तैयार रखें	
6. प्राथमिक चिकित्सा किट तैयार रखें	

Type	Color	A Fires involving wood, paper, textiles, etc.	B Fires involving Flammable Liquids, petrol oil etc.	C Fires involving Flammable gases, butane, propane etx.	D Fires involving burning metals-magnesium	E Fires involving electrical equipment	F Fires involving cooking oil and fats
Water		✓	x	x	x	x	x
Foam		✓	✓	x	x	x	x
Dry Power		✓	✓	✓	x	✓	x
Co_2		x	✓	x	x	✓	x